चैत्र कृष्ण पक्ष – 4 मार्च 2026 से 19 मार्च 2026
चैत्र अमावस्या – 19 मार्च 2026

नचिकेता यम संवाद जीवन के उन क्षणों से जोड़ता है,
जहां मनुष्य अनिवार्य परिवर्तन के सम्मुख खड़ा है...

नचिकेता अग्नि विद्या साधना

अस्थिर मन का अनुशासन, मन की स्थिरता, विवेक, संयम, धैर्य...

आंतरिक अग्नि को विधिपूर्वक साध कर ही जीवन सहजता से आगे बढ़ाया जा सकता है...

आंतरिक ऊर्जा को दबाना नहीं, बल्कि उसे विवेक, विधान से संचालित करना ही जीवन-सफलता का आधार है...

नचिकेता अग्नि विद्या केवल यज्ञ मात्र नहीं है बल्कि इच्छा की अग्नि, चेतना की अग्नि, अनुशासन की अग्नि का सार है। ऊर्जा को बिखरने न देना, बल्कि उसे क्रम, नियम और लय में प्रवाहित करना।

जब मनुष्य एक स्थिति से दूसरी स्थिति में बहुत तेज़ी से जाता है निर्णय का समय कम होता है पुरानी पहचान टूटती है, नई बनी नहीं होती तब चिंतन, मनन और प्रतिक्रिया सब अव्यवस्थित हो जाते हैं।

उपनिषद् में इसे स्पष्ट कहा गया है कि जब मन इंद्रियों के पीछे भागने लगता है और बुद्धि सारथी नहीं रह पाती।

यही कारण है कि परिवर्तन के समय व्यक्ति गलत निर्णय लेता है, आवेश में बोलता है, स्वयं पर नियंत्रण खो देता है।

जैसे यज्ञ में अग्नि को अर्घ्य एक विशिष्ठ विधान और कालखण्ड के अनुसार किया जाता है, वैसे ही जीवन में हर परिवर्तन के समय मन को एक विधि, एक अभ्यास, एक केंद्र चाहिए।

जो मृत्यु और परिवर्तन के क्षण में भी अपने चित्त को स्थिर रख सकता है, वही जीवित है। वर्तमान में इसका अर्थ है परिस्थितियों के बदलाव में भी अपने आत्मसम्मान, अपने वास्तविक आनन्द की रक्षा। परिस्थिति बदले, पर विवेक न बदले गति तेज हो, पर दिशा स्थिर रहे।

आज का नचिकेता कौन? **आज का नचिकेता वह है जो परिवर्तन से भागता नहीं, जो तुरंत लाभ के प्रलोभन में नहीं फंसता, जो अपने भीतर की अग्नि को अनुशासन देता है।**

परिवर्तन को रोका नहीं जा सकता, पर परिवर्तन में स्वयं को खोने से बचाया जा सकता है। यही नचिकेता की अग्नि विद्या है।

ये परिवर्तनशील अवस्थाएं कई प्रकार की हो सकती है जैसे – कैरियर चुनते समय, जीवन साथी का चयन करने समय, स्थान बदलते समय, परिवार से दूर जाते समय, नौकरी बदलते समय, व्यापार में घाटा-लाभ के मोड़ पर, व्यापार बदलते समय, संबंध टूटने या बनने के क्षणों में ऐसी अनगिनत परिस्थितियों में जीवन में बहुत परिवर्तन आते है। इन परिवर्तनों के साथ सांमजस्य स्थापित करना, वो भी आनन्द के साथ नचिकेता अग्नि विद्या के माध्यम से संभव है।

तकनीक और समाज के तीव्र परिवर्तन में सामान्य मनुष्य अक्सर मानसिक रूप से यमलोक जैसे संक्रमण क्षेत्र में पहुंच जाता है अर्थात् मृत्युतुल्य चिन्तन में पहुंच जाता है। जबकि परिवर्तन के समय सबसे बड़ा खतरा यह नहीं कि चीज़ें बदल रही हैं, बल्कि यह है कि **हम तत्काल सुख के लोभ में अपना विवेक नहीं खो दें, विवेक जो बदलती परिस्थितियों में हमें सही ज्ञान दें।**

आपके पास मन है और यह मन इस शरीर में रोम-रोम में स्थापित है और शास्त्र जिसे आत्मा कहते है, आत्मा ज्योति स्वरूप है..., यह परमात्मा की ज्योति है निर्माणकर्त्ता ब्रह्म की ज्योति है जो आपके भीतर प्रज्जवलित हो रही है।

इस परमात्मा की ज्योति को तुम्हारा शरीर मिला है और इस शरीर के माध्यम से सबसे पहला काम यह करना है कि यह ज्योति निरन्तर प्रज्जवलित रहनी चाहिये। इसे आरोग्य द्वारा हम सुरक्षित रख सकते है। इस ज्योति को कर्म द्वारा तीव्र कर सकते है। जब यह ज्योति तीव्र रहेगी तो आप स्वयं आभावान हो जायेंगे क्योंकि परमात्मा आभा स्वरूप है।

– सद्गुरुदेव नन्द किशोर जी श्रीमाली

नचिकेता अग्नि विद्या

मृत्यु का पाश अपने ही सामने काट कर जीवन में स्वर्ग के समान आनन्द प्राप्त करने की क्रिया का नाम ही नचिकेता अग्नि विद्या है। इसमें केवल आवश्यकता है निर्दोष श्रद्धा, अडिग ओज की, आकांक्षा, क्षुद्र प्रलोभन से रहित होकर धैर्य के साथ कार्य करने की, तभी वह आनन्द पूर्ण रूप से बना रहता है।

जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है, इसका आधार अग्नि है, अग्नि को साक्षी रखते हुए अनुष्ठान सम्पन्न किया जाता है और इस प्रयोग को किसी भी रविवार को अथवा किसी भी श्रेष्ठ मुहूर्त में सम्पन्न किया जा सकता है।

इस साधना हेतु एक अग्नि कुण्ड पात्र, जो कि लोहे का अथवा तांबे का बना हो, व्यवस्था पहले से कर लेनी चाहिए, सुविधानुसार जमीन पर यज्ञवेदी मिट्टी से बना सकते हैं, मूल अनुष्ठान इसी पर सम्पन्न किया जाता है।

इसके अतिरिक्त साधना में **'बारह सविता चक्र'**, **'हिरण्मयेन पात्र'**, **'अग्नि प्रोक्त यंत्र'** आवश्यक हैं, साथ ही लाल चन्दन, धूप, दीप, नैवेद्य, सुपारी, तिल, कुश, चावल, दूध, अष्टगंध आवश्यक हैं।

साधना विधान

साधना अनुष्ठान के दिन प्रातः सूर्योदय से पहले उठकर स्नान कर लाल वस्त्र धारण करें, तथा एक लोटे में जल लें, उसमें चन्दन और सरसों डालें, बाएं हाथ से जल को अपने पूरी देह पर थोड़ा छिड़ककर पवित्रीकरण रूप से स्पर्श कराएं तथा थोड़े जल को बांईं नासिका से स्पर्श कर अपनी देह में भगवान शंकर का चिन्तन करें, अब एक ताम्र पात्र में गन्ध, जल, चन्दन, तिल, कुश, चावल, दूध, अष्टगंध मिलाकर सूर्य की ओर मुंह कर सूर्य को प्रणाम कर उसे अर्ध्य अर्पित करें, सूर्य पूजा करते समय मंत्रों द्वारा सूर्य का आह्वान करें –

ॐ भूः ब्रह्महृदयाय नमः।
ॐ भुवः ब्रह्मशिरसे।
ॐ स्वः रुद्र शिखायै।
ॐ भूभुर्व स्वः ज्वालामालिनी शिखायै।
ॐ महः महेश्वराय कवचाय।
ॐ जनः शिवाय नैत्रेभ्यः।
ॐ तपः तापकाय अस्त्राय फट्।

इस प्रकार तीन बार अर्ध्य अर्पित करने के पश्चात साधक अपने पूजा स्थान में जायें तथा संक्षिप्त रूप में गुरु, गणपति पूजन तथा शिव पूजन सम्पन्न करे, तत्पश्चात् अपने हाथ में जल लेकर संकल्प करे, कि मैं अपने बच्चों (यहां बच्चों का नाम लें) के दुःस्वप्न नाश हेतु, आयु वृद्धि हेतु, दृश्यमान और अदृश्यमान बाधाओं के नाश हेतु, अपने गुरु, सूर्य, शिव और गणेश को साक्षी रखते हुए यह अग्नि विद्या सम्पन्न कर रहा हूं, सभी देव मेरी साधना में सहायक हों।

अब अपने सामने एक बाजोट पर सफेद वस्त्र बिछाकर मध्य में **'हिरण्मयेन पात्र'** एक चावल की ढेरी पर स्थापित करें और इसके आगे मंत्र सिद्ध **'अग्नि प्रोक्त यंत्र'** रखें, इस पर चन्दन का तिलक लगाएं और पूजन प्रारम्भ करें, एक दीपक बांईं ओर तथा एक दांईं ओर जला दें।

अब अग्नि मंत्र जप करते हुए **'हिरण्मयेन पात्र'** पर चन्दन, सुपारी, दूध, अष्टगंध अर्पित करें –

अग्नि मंत्र

।।ॐ नमो भगवते हिरण्मयं ज्योति रूपं आदित्याय अहोवाहिनी अहोवाहिनी स्वाहा।।

अब यज्ञ कार्य प्रारम्भ किया जाता है, इस हेतु श्रेष्ठ लकड़ी, उपले (गोबर के कण्डे), तिल, जौ, यज्ञ सामग्री पैकेट की व्यवस्था कर लें, अग्नि जला कर थोड़ी प्रचण्ड होने दें और उसके पश्चात् तिल, जौ से मिश्रित यज्ञ सामग्री से आहुतियां प्रारम्भ की जाती हैं।

सर्व प्रथम अग्नि के बारह मंत्रों का आह्वान किया जाता है, और निम्न मंत्रों का जप करते हुए आहुति दी जाती है –

ॐ इन्द्राय नमः स्वाहा
ॐ धात्राय नमः स्वाहा
ॐ भगाय नमः स्वाहा
ॐ पूषाय नमः स्वाहा
ॐ मित्राय नमः स्वाहा
ॐ वरुणाय नमः स्वाहा
ॐ अर्यमाणाय नमः स्वाहा
ॐ अंशु नमः स्वाहा
ॐ विवस्वान् नमः स्वाहा
ॐ त्वष्टाय नमः स्वाहा
ॐ सविताय नमः स्वाहा
ॐ विष्णु नमः स्वाहा

अब अग्नि के बारह स्वरूपों का यज्ञ करना है, इस हेतु पूजा सामग्री में लाये हुए **'बारह सविता चक्रों'** का प्रयोग करें, ये बारह निम्न स्वरूप हैं –

1. तपिनी, 2. तापिनी, 3. धूम्रा, 4. मरीचि, 5. ज्वालिनी, 6. रुचि, 7. सुधूम्रा, 8. भोगदा, 9. विश्वा, 10. बोधिनी, 11. धारिणी, 12. क्षमा।

इन **'बारह सविता चक्रों'** की आहुति देने के पश्चात् अग्नि मंत्र बोलते हुए 108 आहुति तिल-जौ की और 108 आहुति घी की देनी है, इस प्रकार कुल 216 आहुतियां सम्पन्न करनी हैं। आहुति के समय ऊपर लिखित अग्नि मंत्र का उच्चारण करना है।

इसके पश्चात् उपसंहार आहुति सम्पन्न की जाती है, जिसमें अग्नि देव को दोनों हाथ जोड़ कर प्रार्थना करते हुए निवेदन करें कि – जिस प्रकार अग्नि से अन्धकार का नाश होता है, उसी प्रकार हमारे सभी दोषों का दुष्प्रभाव नष्ट हो, यह पूर्ण यज्ञ आपको समर्पित है, ऐसा बोलकर शेष बची सारी सामग्री यज्ञ कुण्ड में अर्पित कर देनी चाहिए।

जब यह प्रयोग पूर्ण हो जाय तो गुरु आरती सम्पन्न करें, तथा सामने पात्र में रखा हुआ जल पूरे घर में छिड़कें, बच्चों पर जल का स्पर्श कराएं तथा प्रसन्न मन से ब्राह्मण भोजन कराएं अथवा इच्छानुसार दान इत्यादि सम्पन्न करें।

यह अग्नि विद्या रहस्यात्मक विद्या है, और इसका प्रभाव चमत्कारिक रूप से स्पष्ट होता है, सिद्ध होने पर अग्नि देव साक्षात् साधक के भीतर समाकर उसे तेजोमय बना देते हैं, बालकों की रक्षा करते हैं, और जिस प्रकार अग्नि में कोई भी वस्तु भस्म हो जाती है, उसी प्रकार रोग, शोक, दुःख भस्म होकर पूर्णतः समाप्त हो जाते हैं।

प्राण प्रतिष्ठा न्यौ. – 700/-

आप अपने घर में भी यज्ञ-अनुष्ठान सम्पन्न कर सकते हैं पर वह पूर्ण विधि-विधान से हो और यदि उसके बारे में आपको स्वयं जानकारी नहीं हैं और जब आप किसी कार्य की पूर्ण वैधानिकता के बारे में स्वयं आश्वस्त नहीं हों तो वह यज्ञ-अनुष्ठान का कार्य सद्गुरुदेव के निर्देशन में ही करना चाहिए।

जिन साधकों के लिये यज्ञ-अनुष्ठान सम्पन्न करना स्वयं संभव नहीं है वे आरोग्यधाम 'मनोज भारद्वाज' जी से सम्पर्क कर गुरु सान्निध्य में यज्ञ-अनुष्ठान सम्पन्न करवा सकते है। शिव स्वरूप सद्गुरु देव से आज्ञा प्राप्त करने के पश्चात् ही यज्ञ-अनुष्ठान को सम्पन्न करना चाहिये और जब यह अनुष्ठान गुरु सान्निध्य में, गुरुधाम में सम्पन्न होता है तब गुरुकृपा से उच्च स्थिति को प्राप्त कर लेता है। यज्ञ-अनुष्ठान आपकी संकल्पानुसार एक दिन, तीन दिन, ग्यारह दिन, सवा माह अथवा एक वर्ष का भी हो सकता है। यज्ञ में मंत्र शक्ति और आहुति का संगम होता है, स्वाहा तो देवता को अपने समर्पण भाव व्यक्त करने का श्रेष्ठतम् मार्ग है।